मन विचलित हो, तन थका हुआ (कविता)

मन विचलित हो, तन थका हुआ और पथ में बाधायें हजार हो।
दुःख दर्द तुम्हारे संगी सखा हो और ज्वालाओं का प्रहार हो।।
राह कठिन है मत घबराना, रूक मत जाना, चलते जाना।

एक समय ऐसा आयेगा, चहुं दिश अंधकार छायेगा,
अन्तर्मन का दीप जलाना, पथ ज्योर्तिमय हो जायेगा।
स्वजन करेंगे तिरस्कार और पग–पग पर अपमान मिलेगा,
इच्छा शक्ति प्रबल होगी तो कीचड़ में भी कमल खिलेगा।।

एक तरफ आकर्षण जग के और मोह का बंधन होगा,
घोर घृणा की वात बहेगी और करूण क्रंदन भी होगा।
जीवन–मरण दो पहलू टके के स्वयं और सबको समझाना,
नीर बहाकर कुछ न मिलेगा आंखों में आंसू मत लाना।।

-संतोष द्विवेदी

सोचता हूँ (गज़ल)

सोचता हूँ क्या लिखूँ ये सोचता ही रह गया,
हम जहां थे हम वहीं हैं काफिला गुजर गया।

वक्त तो कई मिले इस जिंदगी की राह में,
हम पड़े थे धूप में और वे खड़े थे छांव में।
एक कश्ती ऐसी भी जिसका कोई मांझी नहीं,
और समंदर की लहर के संग ही वह बह गया।।

रात–दिन, दिन–रात का, ये सिलसिला चलता रहेगा,
आदमी जीता रहेगा, आदमी मरता रहेगा।
मौत भी डरने लगी है, अब मेरी तनहाई से,
और बिछड़े उनसे हमको एक जमाना हो गया।।

-संतोष द्विवेदी